



शुक्रवार, 3 दिसम्बर 1971 को पाकिस्तानी वायुसेना द्वारा भारतीय वायु क्षेत्र में की गई घुसपैठ से भारत और पाकिस्तान के बीच पूरी तरह से लड़ाई छिड़ गई। शनिवार, 4 दिसम्बर को, नेशनल हाईस्कूल, बंगलौर की कक्षा 8 'बी' के सामाजिक अध्ययन के शिक्षक नरसन्ना जी कक्षा में आए; पहला पीरियड था, सुबह-सुबह का वक्त था।

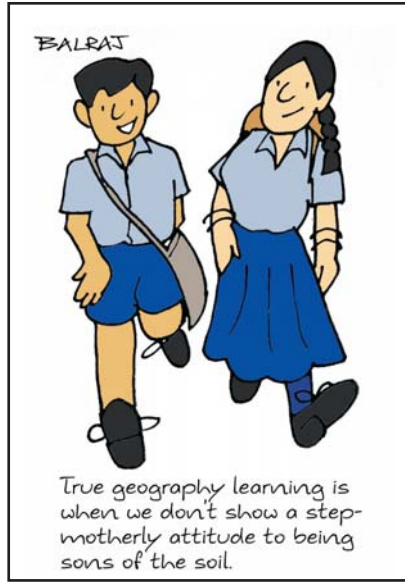
उन्होंने घोषणा की, "आज, हम विश्व समाचारों पर पाँच मिनट चर्चा करेंगे।" हम लोग हल्के-हल्के रोमांचित हुए... अगर नीरस पाठ्यपुस्तक पढ़ने से बचा जा सके तो हम कुछ भी और करने के लिए प्रस्तुत रहते थे। वे दीवार-मानचित्र के लिए इधर-उधर देखने लगे। पर कक्षा में कोई मानचित्र नहीं था। बयासी बच्चे बुद्धुओं की तरह बिना किसी खास दिलचस्पी या भाव के उन्हें देख रहे थे।

फिर उन्होंने हमारे मन में बिजली-सी दौड़ा दी। उन्होंने ब्लैकबोर्ड साफ किया और महाद्वीपीय सीमाओं वाला दुनिया का नक्शा बनाना शुरू कर दिया। पूरी कक्षा की, एक साथ, आश्चर्य भरी आवाज निकल गई और कमरे में महसूस किया जा सकने वाला रोमांच भर गया। उन्होंने आगे आने वाले अनेकों "शिक्षक क्षणों" (जैसा कि मैं आज उन्हें कहता हूँ) — जब बच्चों के दिमाग का 'बल्ब' जल जाता है — में से पहला हासिल कर लिया था। मेरा तो अधिक से अधिक दो वॉट का था। पर वह भी जल गया था!

इसके बाद उन्होंने हमें भारत-पाक लड़ाई के इतिहास का विस्तृत व्यौरा दिया। 1947 से लेकर जल्दी-जल्दी बताते हुए 1971 तक की घटनाओं तक। पूर्वी पाकिस्तानियों पर किए गए अत्याचारों से लेकर उनकी प्रतिक्रियाएँ, पश्चिमी पाकिस्तान द्वारा किया गया सैनिक दमन, इस मामले में चीन की भागीदारी, इन्दिरा गाँधी की यह समझाने के लिए की गई कई पश्चिमी देशों की यात्राएँ कि भारत युद्ध नहीं करेगा (जबकि असल में वह इसकी तैयारी कर रहा था)। इन सभी बातों को नाटकीय ढंग से बच्चों द्वारा बोली जाने वाली कन्नड़ में बताया गया। नरसन्ना जी अद्भुत व्यंग्य चित्रकार भी थे। इन्दिरा और रिचर्ड (निकसन) अपनी-अपनी उभरी हुई नाकों के साथ ब्लैकबोर्ड पर एक दूसरे के सामने थे। टिक्का खान भारत द्वारा किए जा रहे अन्याय के विरोध में अल्पभाषी चाऊ एन लाई से चिल्लाते हुए शिकायत कर रहा था। पाँच मिनट की चर्चा इतनी फैली कि उसमें युद्ध के पूरे दौर (जो कि गुरुवार, 16 दिसम्बर को समाप्त हुआ) में पड़ने वाली सामाजिक अध्ययन की सभी कक्षाएँ

लग गईं। उन्होंने इस दौर में भूराजनीति, राजनैतिक इतिहास, और राजनैतिक तथा ऐतिहासिक भूगोल से मेरा परिचय करवा दिया था।

इसके 22 साल बाद, 1993 में, मैंने भूगोल में पी. एच.डी. प्राप्त की और अपना शोध-प्रबन्ध श्री नरसन्ना की स्मृति को समर्पित कर दिया। आज 2010 में, 39 साल बाद भी मुझे उस शनिवार सुबह हुई हर अनुभूति की जीवन्त याद है।



यही शिक्षक की ताकत है। यह घटना हमें आज के वक्त के लिए कई चीजें सिखाती है। मैं यहाँ कुछ का वर्णन करूँगा।

शिक्षक की ताकत

श्री नरसन्ना बहुत ही ऊँचे दर्जे के शिक्षक थे — अपने विषय से बहुत गहरे जुड़ाव और उस विषय की व्याख्यात्मक शक्ति से सराबोर। जिस बात को सरकार द्वारा बनाई गई भूगोल की किताबें कभी जागृत नहीं कर पाईं, उन्होंने कर दिया: भौगोलिक कल्पनाशीलता!

उनका पढ़ाना ऐसा था कि मैं सेना की चालों तथा जवाबी चालों की कल्पना कर सकता था।

उस समय टीवी, इन्टरनेट, समाचार चलचित्र (वे तो हमेशा ही काफी बाद में आते थे), कुछ नहीं था। बस नरसन्ना जी का वृत्तान्त, उनके नक्शे, व्यंग्यचित्र, स्वाँग और अखबार थे। मैंने 4 दिसम्बर 1971 से अखबार पढ़ना शुरू किया। तब से ही, मैंने हमेशा भूगोल को समसामयिक घटनाओं से जोड़कर देखा है, और मुझे यह समझ में आया है कि दुनिया की सही समझ हासिल करने के लिए भूगोल का ज्ञान आवश्यक है।

प्रायद्वीपीय भारत के आकार का महत्व, हिमालय की स्थिति, बँटवारे की वजह से संसाधनों का पुनर्आबँटन, जलवायु की विविधताएँ, सांस्कृतिक भूगोल, और बाँग्लादेश के उद्भव के बारे में असंख्य अन्य कारक मेरे समक्ष जीवन्त हो गए थे।

प्रासंगिकता की प्रासंगिकता

दक्षिण एशिया के भूगोल से मेरा परिचय पहले से चल रही एक ऐसी प्रक्रिया के द्वारा कराया गया जिसका मैं हिस्सा था — राशन, हमारे

जवानों के लिए राशि जुटाना, रात में सुरक्षा कारणों से किए जाने वाले प्रकाश-रोधन के लिए घर की खिड़कियों के शीशों पर कथई कागज लगाना आदि। उस कक्षा में जो उन्होंने पढ़ाया उसकी तात्कालिक प्रासंगिकता थी। मैं बंगलौर में होने वाले रात्रिकालीन प्रकाश-रोधन की भौगोलिक वजह को समझ गया था। मैं दुबले-पतले छोटे-छोटे बच्चों के उस दल का सदस्य था जो लोगों को यह याद दिलाने के लिए सड़क पर यहाँ से वहाँ घूमता रहता था कि सीटी बजने तक सारी लाइटें बन्द रखें!

अभी की बात करें – हाल ही में मैंने कन्नड़ माध्यम के एक सरकारी स्कूल की सातवीं कक्षा की सामाजिक विज्ञान की कक्षा का दौरा किया। उस कक्षा के विद्यार्थियों ने मुझे बताया कि वे यूरोप कि प्राकृतिक विशेषताएँ पढ़ रहे थे। क्या शानदार बात थी!

मैंने एक गोला खींचा, प्रमुख अक्षांश बनाए, बच्चों से उनकी पहचान करवाई, और फिर मैंने उनसे आग्रह किया कि कोई भी एक बच्चा बोर्ड पर आकर यह दर्शाए कि पृथ्वी पर यूरोप कहाँ स्थित है। कोई भी नहीं बता सका। उन्हें यह भी नहीं पता था कि यूरोप क्या है। और जब मैंने किसी से यह बताने को कहा कि भारत कहाँ है तब भी यही नतीजा सामने आया।

मैंने उन लोगों से पूछा कि वे ऐसी पढ़ाई का अपने जीवन में क्या उपयोग देखते हैं। कोई उत्तर नहीं मिला। निश्चित ही ढेर सारे उपयोग हैं। आइए हम ऐसी उपयोगिता को सन्दर्भ के दायरे में रखकर देखें। मैंने उनसे पूछा कि क्या वे अपने रोजमर्रा के जीवन में भूगोल का किसी जाहिर ढंग से उपयोग करते हैं। फिर कोई उत्तर नहीं। मैंने उनसे पूछा कि वे रोज स्कूल कैसे आते हैं और उन्हें घर से स्कूल तक का और स्कूल से वापस घर तक का रास्ता कैसे पता है। “यहीं पर आप भौगोलिक ज्ञान का उपयोग करते हो।” बच्चों ने काफी कुछ ज्ञानियों के माफिक सिर हिलाया।

इसके बाद, मैंने उनसे पूछा कि उनमें से कितने लोग खेती करने वाले परिवारों से हैं। लगभग सभी थे। हमने सभी बच्चों की पारिवारिक भूमियों पर उगाई जाने वाली फसलों के बारे में एक झटपट सर्वेक्षण किया। फिर मैंने उनसे पूछा कि क्यों कुछ खास फसलें ही उगाई जाती हैं और बाकी नहीं। और इस चर्चा से जल्दी ही मिट्टी, जलवायु, पानी, बाजार, आहार-सम्बन्धी प्राथमिकताओं, और पीढ़ियों से चली आ रही कार्यप्रणालियों और दस्तूरों का महत्व सामने आया। मैंने उन्हें बताया कि उनके माता-पिता व्यावहारिक भूगोलज्ञ हैं और यहीं पर, रोजमर्रा के जीवन में, भूगोल का उपयोग होता है। ठीक लोगों के घरों में।

हमें ठीक हमारे पैरों के नीचे मौजूद भूगोल के साथ रिश्ता जोड़े बगैर दूरस्थ स्थलों के बारे में पढ़ाई करने की उपयोगिता पर सवाल खड़े

करना चाहिए। विद्यार्थियों के जीवन के लिए प्रासंगिक होने वाला कोई भी विषय उन्हें आकर्षक लगेगा।

विषय, अध्ययन-विधा, एकीकरण

विषयों को इस तरह से पढ़ाया जाता है जैसे कि वे अलग-थलग जलरोधी डिब्बे हों। अधिकांश विद्यार्थियों को यह नहीं सिखाया जाता कि भूगोल किस तरह भौतिकी, रसायनशास्त्र, जीवविज्ञान, रेखागणित, अर्थशास्त्र, मानवशास्त्र, समाजशास्त्र, भाषा, और कलाओं को एक साथ लाकर हमारी दुनिया को समझ में आने लायक बना सकता है। भूगोल की शक्ति दोहरी होती है: (अ) वह हमारी दुनिया को अर्थपूर्ण करने के लिए एक अनोखा ढाँचा – भौगोलिक या स्थानिक ढाँचा – प्रदान करता है, और (ब) इससे, सभी विषयों को इस ढाँचे के साथ एकीकृत करने के बारे में दिमाग खुल जाता है जिससे घटनाओं और वस्तुओं की अन्तर्सम्बद्धता स्पष्ट हो जाती है। जब हम यह तरीका अपनाते हैं, तो हम भूगोल को एक अध्ययन-विधा के रूप में पढ़ाते हैं, न कि सिर्फ एक विषय की तरह से।

यह केवल एक बौद्धिक कसरत नहीं है। हमारी दुनिया की एक समेकित ('अखण्ड') समझ होने से हम समस्याओं को विश्लेषित करने व सुलझाने के लिए, योजना बनाने के लिए, और सामाजिक न्याय हेतु काम करने के लिए बेहतर ढंग से तैयार हो पाते हैं। भूगोल, इस 'क्षैतिज एकीकरण' (विभिन्न विषयों को एक ही स्तर के अन्तर्गत जोड़ना) के कार्य में बहुत महत्वपूर्ण ढंग से सशक्त भूमिका निभाता है। मैं दक्षिण-पश्चिमी मानसूनों के उदाहरण की मदद से शिक्षकों और बच्चों की यह समझने में मदद करता हूँ कि किस तरह भूगोल अपने साथ अन्य विषयों को जोड़ने में मदद करता है। आपको भौतिकी, रसायनशास्त्र, भूगोल, संस्कृति, जीवविज्ञान, गणित, ललित कलाओं, भाषाओं, आदि का उपयोग किए बगैर दक्षिण-पश्चिमी मानसूनों की भव्यता का पूरा बोध नहीं हो सकता। इस तरह की कार्यशाला के बाद मेरे पास भूगोल के शिक्षक तक आकर कहते हैं, “मैंने भूगोल को लेकर इस तरह से कभी सोचा ही नहीं था!” यह पद्धति आकर्षक है, मजेदार है और सीखने-सिखाने का सशक्त ढंग है। बस जरूरत है एक सहयोगपूर्ण प्रक्रिया की, जिसमें उन्हें अपनी कक्षाओं में विभिन्न प्रसंगों (टॉपिक्स) को पढ़ाने की समय-सारिणी तैयार करके उन्हें वापस दक्षिण-पश्चिमी मानसूनों से जोड़ देना है; अक्सर, ऐसा सम्बन्ध जोड़ने के लिए अन्य उदाहरणों के बजाय मानसून के उदाहरणों का उपयोग करना काफी होता है। यह पद्धति बच्चों को भूगोल के सामर्थ्य से परिचित कराती है और यह समझने में उनकी मदद करती है कि कैसे भूगोल अन्तर्विषयक सोच को प्रोत्साहित करता है।



भूगोल की शक्ति दोहरी होती है: (अ) वह हमारी दुनिया को अर्थपूर्ण करने के लिए एक अनोखा ढाँचा – भौगोलिक या स्थानिक ढाँचा – प्रदान करता है, और (ब) इससे, सभी विषयों को इस ढाँचे के साथ एकीकृत करने के बारे में दिमाग खुल जाता है जिससे घटनाओं और वस्तुओं की अन्तर्सम्बद्धता स्पष्ट हो जाती है।



विद्यार्थियों के कक्षा-दर-कक्षा आगे बढ़ने के साथ-साथ, उनका भूगोल का ज्ञान स्पष्ट और काम में आने लायक ढाँचों तथा कौशल-समूहों ('ऊर्ध्वाधर एकीकरण') के रूप में विकसित होना चाहिए। दक्षिण-पश्चिमी मानसून का उदाहरण यहाँ भी लागू हो सकता है। शुरुआत हो सकती है मानसूनों के साथ जुड़ी सामान्य बातों – मूसलाधार बारिश, बारिश में खेलना, बारिश में खेलने को लेकर लोगों के डर, बरसाती मौसम के दौरान हमें किस तरह की चीजें खाना पसन्द होती हैं, इत्यादि – पर ध्यान देने से। हर आने वाले वर्ष के साथ इसमें कुछ बातों को जोड़ा जा सकता है जैसे कि मानसूनी तंत्र की पेचीदगी पर विचार करना, हम उसे किस तरह समझने की कोशिश करते हैं, उसके व्यवहार को निर्धारित करने वाले कारक कौन से हैं, इत्यादि। इस प्रकार, भूगोल का विद्यार्थी उत्तरोत्तर वर्षों में संरचनाओं की समरूपता से शुरू करके उनके उत्पादक कारकों और संरचनाओं के विश्लेषणों से होते हुए, प्रभावों और फिर अन्ततः उपयोग पर पहुँचने की प्रक्रिया में विविध कौशल विकसित कर लेगा।

21वीं सदी में भूगोल की शिक्षा की पुनर्कल्पना

21वीं सदी में, और 21वीं सदी के लिए, भूगोल की शिक्षा के सिद्धान्तों और उसके व्यावहारिक स्वरूप में सुधार करने की जबरदस्त जरूरत है ताकि शिक्षकों और विद्यार्थियों, दोनों को ज्यादा समर्थ बनाया जा सके। हमें शुरुआत इस बुनियादी स्वीकृति के साथ करना होगी कि मानव जाति के विकास के लिए सामाजिक विज्ञान की शिक्षा उतनी ही महत्वपूर्ण है जितनी कि 'प्राकृतिक' विज्ञानों की। यह शिक्षकों को शिक्षित किए बगैर सम्भव नहीं होगा।

हमें एक साथ त्रिमार्गी पद्धति अपनाने की जरूरत है

1. पाठ्यचर्या आधारित विकास

पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम परीक्षाएँ, और उत्तीर्ण होने का प्रतिशत, ये सब जीवन की वास्तविकताएँ हैं। लेकिन, एक समर्थ शिक्षक

अवधारणात्मक समझ और उसकी उपयोगिता को स्पष्ट करने के लिए बस थोड़ा-सा अतिरिक्त प्रयास करके भूगोल की कक्षा को आकर्षक बना सकता है।

भौगोलिक अवधारणाओं को समझाने के लिए वर्तमान घटनाओं और अन्य जानी-पहचानी गतिविधियों का उपयोग करना एक प्रभावशाली तरीका है। उदाहरण के लिए, बच्चों को अक्षांश और देशान्तर पढ़ाना भूगोल के किसी मिडिल स्कूल शिक्षक के लिए सबसे कठिन चीजों में से एक होता है। कैलेण्डर के दो पर्वों – क्रिसमस और नववर्ष – का उपयोग करके इन दोनों चीजों को प्रभावशाली ढंग से पढ़ाया जा सकता है। बच्चों को कूदकर खाने पार करने के खेल (हॉपस्काच) में बहुत मजा आता है। उन्हें स्थानिक संरचना का बुनियादी सिद्धान्त सिखाने का यह बहुत अच्छा तरीका है। (आप इस गतिविधि में बन्धी- बन्धायी लैंगिक धारणाओं को भी तोड़ सकते हैं)।

समसामयिक घटनाओं का शिक्षण में उपयोग करने के लिए शिक्षक को थोड़ा शोध करना जरूरी होता है। विद्यार्थियों का अखबार पढ़ना भी जरूरी होगा। इसके लिए, कई अखबारों के सामान्यतया कम उपयोग किए जाने वाले न्यूज़पेपर्स इन एजुकेशन (एनआईई) कार्यक्रम उपयोगी हो सकते हैं।

अधिकांश मामलों में, शिक्षक-विद्यार्थी अनुपात बहुत-सी गतिविधि-आधारित शिक्षण विधियों के हिसाब से प्रतिकूल होता है। कोई कहानी सुनाना, कोई कविता याद करना, कोई फिल्मी गीत... ये सभी तरीके टॉपिक्स को प्रासंगिक और आनन्ददायी बना देते हैं। आनन्दपूर्ण होने से उनकी समझ और अधिक स्पष्ट होगी और, यदि अच्छे सम्प्रेषण कौशल विकसित किए जाएँ, तो परीक्षाओं में बच्चों का प्रदर्शन भी बेहतर हो सकेगा।

2. सह-पाठ्यचर्या विकास

पाठ्यचर्या से जुड़ी अतिरिक्त पढ़ाई सहयोगात्मक होती है और पाठ्यपुस्तक के विषय-प्रसंगों से सम्बद्धित रहती है, पर जरूरी नहीं कि इसका सीधा-सीधा लक्ष्य परीक्षा परिणामों को बेहतर बनाना हो। विद्यार्थी किसी विषय-प्रसंग को बेहतर ढंग से समझ पाते हैं, उसका व्यावहारिक रूप से उपयोग कर पाते हैं, और इसलिए परीक्षा में कुछ प्रश्नों का बेहतर उत्तर दे पाते हैं (यह अन्तिम बात तो कई फायदों में से सिर्फ एक है)। जरूरी नहीं कि ये गतिविधियाँ अंक/क्रेडिटों में तब्दील हों। उदाहरण: जलवायु/मौसम के अध्याय के हिस्से के तौर पर एक अखबार का उपयोग करते हुए किसी जगह के दैनिक तापमानों में होने वाले उतार-चढ़ावों को समझना। भले ही सीधे तौर पर यह परीक्षा में आनेवाला सवाल न हो, पर इससे विद्यार्थियों को यह समझने में

मदद मिलती है कि जीवन के परिवेश में भूगोल किस तरह से काम कर रहा होता है।

3. पाठ्येतर विकास

भूगोल के सही अध्ययन के लिए यह सबसे महत्वपूर्ण विधि है। इससे विद्यार्थियों के मन में भूगोल के प्रति और दिलचस्पी पैदा करने में मदद मिलती है और पाठ्यचर्या-आधारित विकास को और बेहतर करने में भी मदद मिलती है। यह भूगोल की सर्वश्रेष्ठ मूल्य-सम्बन्धित शिक्षा है। यहीं पर नागरिक-सामाजिक ढाँचों को बहुमूल्य भूमिका निभाना होती है ताकि वे शिक्षकों और विद्यार्थियों, दोनों को सशक्त व समर्थ बनाएँ। इस तरीके में कम से कम निम्नलिखित अंग शामिल होंगे:

अ. जमीनी-प्रायोगिक कार्य – जमीनी-प्रायोगिक कार्य के माध्यम से भूगोल को समझना जैसे टहलते हुए, लोगों से बात करके, सर्वेक्षण इत्यादि के द्वारा भूदृश्य का विश्लेषण।

हम किस तरह पर्यावरण में मानव भूगोल की रचना करते हैं, इसे समझने का एक आसान ढंग है यह देखना कि हम किस तरह वाहनों के यातायात को पैदल यातायात (जो भारत में एक गम्भीर शहरी समस्या है) की तुलना में विशेष सुविधाएँ देते हैं; अपने भौगोलिक विस्तार में हम बहुत छोटे और बहुत वृद्ध लोगों की सुरक्षा चिन्ताओं पर किस तरह ध्यान देते हैं; शारीरिक रूप से अक्षम लोगों को हम किस तरह भौगोलिक पहुँचमार्ग मुहैया कराते हैं या उससे वंचित करते हैं।

एक बहुत दिलचस्प और शिक्षाप्रद अभ्यास होगा कि बच्चे अलग-अलग तरीकों (मौखिक रूप से, शाब्दिक रूप से, लिखित रूप से, मानचित्रों द्वारा, आदि) से दिशानिर्देश दें और उन दिशानिर्देशों का अनुसरण करें। इससे भूगोल से सम्बन्धित उनकी मानसिक कुशाग्रता और प्रखर होगी और वे उसे बहुत बेहतर ढंग से सम्प्रेषित कर पाएँगे क्योंकि वे पहले तो इसके के प्रति सचेत होंगे और फिर समय के साथ उसमें 'सहज निष्णात' हो जाएँगे।

“ भौगोलिक अवधारणाओं को समझने के लिए वर्तमान घटनाओं और अन्य जानी-पहचानी गतिविधियों का उपयोग करना एक प्रभावशाली तरीका है। उदाहरण के लिए, बच्चों को अक्षांश और देशान्तर पढ़ाना भूगोल के किसी मिडिल स्कूल शिक्षक के लिए सबसे कठिन चीजों में से एक होता है। कैलेण्डर के दो पर्वों – क्रिसमस और नववर्ष – का उपयोग करके इन दोनों चीजों को प्रभावशाली ढंग से पढ़ाया जा सकता है। ”

प्रायोगिक कार्य की तकनीकें विद्यार्थियों को सम्प्रेषण के बहुत से कौशल भी सिखा सकती हैं। यदि उन्हें यह पता लगाना हो कि उनके अपने पड़ोस में सार्वजनिक वृक्षों का लोगों के लिए क्या महत्व है, तो ऐसे में उन्हें कौन से सवाल पूछना चाहिए, उन्हें कैसे पूछा जाना होगा, वे यह कैसे जानेंगे कि जिन उत्तरों की उन्हें तलाश है वे उनके प्रश्नों से उन्हें मिलेंगे कि नहीं, आदि।

मैंने एक बार विद्यार्थियों से स्कूल के भीतर ही सर्वेक्षण करने को कहा। उन्होंने तुरन्त ही कहा, “सर, हो सकता है कुछ लोग हमसे बात न करें।” ढेर सारे मजेदार सवाल और एक-दूसरे की हँसी उड़ाते विनोदपूर्ण वातावरण में मैंने उन्हें यह समझा दिया कि लोगों से भूगोल सम्बन्धी जानकारी हासिल करने हेतु किए जाने वाले संवाद में शारीरिक भाषा का कितना महत्व होता है। “तुम लोग बच्चे हो। अगर तुम ‘कुत्तों के बच्चों जैसा प्यारा’ चेहरा बनाकर कोई बात पूछोगे तो कोई भी तुम्हें न नहीं कह पाएगा।” केवल कुछ ही बच्चों को इस तरीके का उपयोग करना पड़ा पर उनके मुताबिक उन्हें सफलता हासिल हुई।

ब. केस स्टडीज़ (वास्तविक मामलों के अध्ययन)— वास्तविक जीवन से जुड़ी केस स्टडीज़ लेना, वास्तविक आँकड़े इकट्ठे करना और जीवन की अव्यवस्था को समझना और वास्तविक मुद्दों जैसे सामाजिक न्याय, पर्यावरण संरक्षण, आपदा प्रबन्धन, सुरक्षा, सेवाओं की उपलब्धता, वाणिज्य, इत्यादि के समाधानों के बारे में सोचने के लिए शोध करना। मैंने भूगोल-सम्बन्धी शहरी मुद्दों के बारे में बच्चों को सिखाने के लिए सामाजिक मुद्दों (उदाहरण के लिए: बंगलौर में वेश्यावृत्ति में लिप्त लड़कियों की केस स्टडी) पर गैर सरकारी संगठनों द्वारा किए गए कार्यों के आँकड़ों का उपयोग किया और पाया कि विद्यार्थी सामाजिक न्याय के मुद्दों के प्रति बहुत बुद्धिमत्तापूर्वक और संवेदनशीलता से प्रतिक्रिया देते हैं।

स. आईटी (सूचना-प्रौद्योगिकी) समर्थ भूगोल शिक्षा— भौगोलिक आँकड़ों को संसाधित करने के आधुनिक तकनीकी उपकरणों जैसे जीपीएस, जीआईएस, इंटरनेट, आदि का उपयोग करना सीखने से विद्यार्थियों को महत्वपूर्ण विश्लेषणात्मक और समस्या-निवारक योग्यताएँ हासिल होती हैं जिनसे उन्हें 21वीं सदी में विचारों और नौकरियों के बाजार में प्रतिस्पर्धा करने में मदद मिलती है।

दुर्भाग्यवश, अधिकांश पाठ्यक्रम इस बात की ओर गम्भीरता से ध्यान नहीं देते। इस कमी को नागरिक-सामाजिक संस्थाओं को ही पूरा करना होगा। इस लेख को लिखते वक्त, द इण्डियन इन्सटीट्यूट ऑफ ज्योग्राफिकल स्टडीज़ द्वारा बंगलौर के एक स्कूल के परिसर में जिओविद्या ज्योग्राफी सेंटर फॉर ऐकसीलेस की

स्थापना की जा रही है ताकि निकट भविष्य में इस दिशा में सघन कार्य करने के लिए छोटे-छोटे समूह शुरू किए जा सकें।

कम्प्यूटरों की बुनियादी जानकारी, और भूगोल की बुनियादी अवधारणाओं की गहरी समझ रखने वाले विद्यार्थी इन उपकरणों को समझ पाएँगे और काफी जल्दी ही वे उनका उपयोग करना भी सीख जाएँगे। आठवीं कक्षा से लेकर आगे तक के सभी विद्यार्थियों को इन प्रौद्योगिकियों और तकनीकों की समझ हासिल होना चाहिए। गूगल अर्थ और ऐसे ही अन्य मंच अच्छी-खासी शुरुआत हैं पर वे भौगोलिक ज्ञान की उत्पत्ति और उपयोग के लिए जरूरी प्रखर योग्यताएँ प्रदान नहीं करते। लेकिन, शुरुआत तो कहीं से की ही जाना चाहिए।

तो सार रूप में मैं यही कहना चाहूँगा कि हमारे विद्यार्थियों के स्थानिक बोध के सभी आयामों को विकसित करने के लिए भूगोल की शिक्षा बेहद महत्वपूर्ण है। भूगोल को सामाजिक और प्राकृतिक विज्ञानों के बीच एक पुल के रूप में देखा जाना चाहिए। भारत में 60 साल से भी ज्यादा समय से हम शिक्षा में 'बुनियादी बातों' की जरूरत पर जोर देते रहे हैं। और यह बिलकुल सही है।

लेकिन, अगर हम चाहते हैं कि एक नई साहसी दुनिया के उद्वेग की प्रक्रिया में ज्यादा से ज्यादा लोगों की भागीदारी सुनिश्चित करने में हम मदद कर सकें तो हमें तुरन्त ही सतत प्रयास करके शिक्षा में 'मूल्य संवर्धन' को जगह देने पर जोर देना होगा।

इससे कम में काम नहीं चलेगा।

इन मुद्दों के बारे में दो ब्लॉग हैं जो बड़े उपयोगी साबित हो सकते हैं। पर इस लेख को लिखते वक्त नेट पर उनका स्थान बदला जा रहा है। उनके यूआरएल जानने के लिए कृपया मुझसे बाद में सम्पर्क करें।

चन्द्रशेखर बालचन्द्रन बंगलौर के निवासी हैं। उन्होंने लगभग 25 सालों तक अमेरिका और भारत में स्कूली तथा विश्वविद्यालयीन स्तर पर भूगोल शिक्षा के क्षेत्र में काम किया है। वे द इण्डियन इंस्टीट्यूट ऑफ ज्यॉग्रॉफिकल स्टडीज (<http://tiigs.org>), बंगलौर, के संस्थापक व निदेशक हैं, जिसका काम है शिक्षकों और विद्यार्थियों को नूतन व प्रासंगिक भूगोल शिक्षा देने व ग्रहण करने के लिए समर्थ बनाना। वे द हिन्दु के परिशिष्ट "यंग वर्ल्ड" में युवा लोगों के लिए भूगोल-सम्बन्धी लेख अक्सर ही लिखते हैं। उनसे इस balachandran@tiigs.org ईमेल पते पर सम्पर्क किया जा सकता है।

